REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

कार्योजित महिलाओं के वैवाहिक समायोजन में आने वाली समस्याएँ

डॉ. ज़किया रफत
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष , समाजशास्त्र विभाग ,
आर. बी. डी. स्नात्कोत्तर महिला महाविद्यालय, बिजनौर.

सारांश :

सभी समाजों में विवाह एक अनिवार्य संस्था रही है। यह संस्था परिवार संस्था की जनक है। परिवार की सफलता वैवाहिक समायोजन पर निर्भर है। परन्तु आधुनिक भारत में महिलाओं की स्थिति तथा भूमिकाओं के बारे में तीव्र गति से परिवर्तन आ रहा है जो स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। आधुनिकीकरण व शिक्षा के बढ़ते अवसरों ने महिलाओं को आत्मनिर्भरता प्रदान की है। घर से बाहर कार्य करने के कारण कार्योजित महिलाओं पर दोहरा कार्यभार पड़ता है। जो उनके वैवाहिक व पारिवारिक जीवन को प्रभावित करता है। एक व्यक्ति की प्रगति व विकास उसके सुखी व सफल वैवाहिक जीवन पर निर्भर करता है। अतः प्रस्तुत शोधपत्र उनके वैवाहिक समायोजन में आने वाली समस्याओं पर केन्द्रित है।

प्रस्तावना :

स्त्री–पुरूष अनेक आकांक्षाओं और उमंगों को लेकर वैवाहिक सम्बन्धों को स्वीकार करते है। इन आकांक्षाओं तथा उमंगों की पूर्ति समायोजित वैवाहिक जीवन के द्वारा ही हो सकती है। अर्ल लौमौन कूज के अनुसार, ''पति–पत्नी द्वारा अपने विवाह में की गई अपेक्षाओं की पूर्ति ही समायोजन है।''

समायोजन एक मनावैज्ञानिक धारणा है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण से स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित करता है, जिसके फलस्वरूप उसे प्रसन्नता एवं संतोष प्राप्त होता है।

स्मिथ के अनुसार, ''एक अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है। वह कुण्ठाओं, तनावों और चिन्ताओं को जहां तक सम्भव है, कम करता है।

वैवाहिक समायोजन का अर्थ है विवाह के पश्चात वर–वधू यथार्थ पर आधारित तथा संतोषपूर्ण जीवन व्यतीत करें। इस हेतु वे अपना व्यक्तिगत स्वार्थ छोड़कर समझौता पूर्ण नीति अपनाएं एवं खुली दृष्टि से स्थिति को समझने का प्रयास करें। इससे उनके पारिवारिक जीवन में कुण्ठाओं, तनावों एवं चिन्ताओं में कमी आयेगी।

परिवार की सफलता वैवाहिक समायोजन पर निर्भर है। वैवाहिक समायोजन के अभाव में परिवार टूट जाते हैं। परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि परिवार टूटते नहीं है किन्तु वैवाहिक समायोजन के अभाव में परिवार के सदस्यों के सम्बन्ध मधुर नहीं होते है, उनमें व्यक्तिगत स्वार्थ व अहम् की भावना टकराती है। बच्चों का विकास सामान्य नहीं हो पाता और परिवार का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

वर्तमान समय में शिक्षा ग्रहण करने तथा महिलाओं के घर के बाहर कार्य करने से उनके वैवाहिक समायोजन में समस्याएं आ रही है। कार्योजित महिलाएं दोहरी जिम्मेदारी निभा रही है। उसे नौकरी के साथ–साथ घर के काम–काज और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी भी पूर्व की तरह निभानी पड़ती है तथा परम्परागत जिम्मेदारियों के मामले में उसे कोई रियायत नहीं मिलती।

उमा शंकर झा के अनुसार, ''यह स्थिति एक महिला के लिए विशेष रूप से कष्टकारी हो जाती है। वह घर से बाहर कार्य तो करती है, परन्तु साथ ही उन्हें परम्परागत स्त्रीत्व के प्रतिरूप से भी बंधना पड़ता है।'' डी0पाल का मानना है कि ''सामाजिक और आर्थिक विकास में सहभागिता के बावजूद एक महिला का स्तर असंतोषजनक है।'' कार्योजित महिला घर और बाहर के कार्यों का निर्वाह भली प्रकार से नहीं कर पाती। उनको इन दोनों में से एक का चुनाव करना पड़ता है अन्यथा कार्य करने की स्थिति में वैवाहक व मातृत्व सुख बहुत मुश्किल है।''

इस सबके परिणामस्वरूप उनमें तनाव, निराशा व अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वे कुण्ठाग्रस्त हो जाती है और उनमें अपने कार्यों के प्रति समायोजन में कठिनाई आती है क्योंकि एक व्यक्ति का विकास उसके सुखी वैवाहिक जीवन पर निर्भर करता है। अतः वर्तमान में कार्योजित महिलाओं के वैवाहिक समायोजन में आ रही समस्याओं को जानने की अत्यन्त आवश्यकता है।

अध्ययन के उददेश्य :

1. महिलाओं में वैवाहिक समायोजन की स्थिति का पता लगाना।
2. वैवाहिक समायोजन में आने वाली समस्याओं का पता लगाना।

अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित जनपद बिजनौर के बिजनौर नगर में सम्पन्न किया गया है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक शोध प्ररचना के अन्तर्गत किया गया है। अध्ययन हेतु 25 से 35 वर्ष आयु की 50 इकाईयों का चयन उददेश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया। चयनित सूचनादाताओं से आंकड़ों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया।

उपलब्धियां :

प्रस्तुत अध्ययन की निम्न उपलब्धियां रहीं है–

सूचनादाताओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि

1. आयु :

तालिका–1

क्र0सं0	आयु	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	20 – 25	15	30
2	25 – 30	19	38
3	30 – 35	16	32
	कुल	**50**	**100**

प्रस्तुत अध्ययन के लिए सूचनादाताओं की आयु संरचना का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि 30 प्रतिशत सूचनादाता 20 से 25 वर्ष, 38 प्रतिशत 25 से 30 वर्ष, एवं 32 प्रतिशत 30 से 35 वर्ष की आयु से सम्बन्धित है।

2. शिक्षा :

तालिका–2

क्र0सं0	शिक्षा का स्तर	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	बी0ए0	15	30
2	एम0ए0	10	20

3	एम0ए0, बी0एड0 / बी.टी.सी.	14	28
4	पी0एच0डी0	05	10
5	एम0बी0बी0एस0 / बी0डी0एस0	06	12
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से सूचनादाताओं की शिक्षा के स्तर का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि 30 प्रतिशत सूचनादाता बी0ए0, 20 प्रतिशत एम0ए0, 28 प्रतिशत एम0ए0, बी0एड0 / बी0टी0सी0, 10 प्रतिशत पी0एच0डी0 तक शिक्षा प्राप्त है। 12 प्रतिशत सूचनादाताओं ने एम0बी0बी0एस0 अथवा बी0डी0एस0 किया है।

3. व्यवसाय :

तालिका : 3

क्र0सं0	व्यवसाय	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	प्राइवेट	18	36
2	सरकारी	32	64
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 36 प्रतिशत सूचनादाता प्राइवेट व्यवसायों से सम्बन्धित है तथा 64 प्रतिशत सरकारी क्षेत्र में कार्यरत हैं।

4. परिवार :

तालिका : 4

क्र0सं0	परिवार	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	एकाकी	16	32
2	संयुक्त	34	68
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से सूचनादाताओं की पारिवारिक स्थिति देखने पर स्पष्ट होता है कि 32 प्रतिशत सूचनादाता एकाकी परिवार से तथा 68 प्रतिशत संयुक्त परिवार से सम्बन्धित है।

5. विवाह के प्रकार :

तालिका : 5

क्र0सं0	विवाह के प्रकार	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	अरेंज मैरिज	40	80
2	लव मैरिज	05	10
3	लव कम अरेंज मैरिज	05	10
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 80 प्रतिशत सूचनादाताओं ने अरेंज मैरिज की है। 10 प्रतिशत ने लव मैरिज तथा 10 प्रतिशत की लव कम अरेंज मैरिज की है।

अतः निष्कर्ष निकलता है कि आज भी अरेंज मैरिज विवाह का सर्वाधिक प्रचलित रूप है।

6. जीवन साथी के चुनते समय देखे गये आवश्यक गुण :

तालिका – 6

क्र0सं0	आवश्यक गुण	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	सुन्दरता	1	2
2	चरित्र	8	16
3	शिक्षा	13	26
3	व्यवसाय/आर्थिक स्थिति	25	50
3	पारिवारिक पृष्ठभूमि	03	06
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि विवाह साथी के चयन में सर्वाधिक 50 प्रतिशत सूचनादाताओं ने वर के व्यवसाय व आर्थिक स्थिति को महत्व दिया। 16 प्रतिशत सूचनादाताओं ने चरित्र, 26 प्रतिशत ने शिक्षा, 6 प्रतिशत ने पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा केवल 2 प्रतिशत ने सुन्दरता को महत्व दिया।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान में सूचनादाताओं व उनके माता–पिता द्वारा वर के परिवार व उसकी सुन्दरता को महत्व न देकर उसकी शिक्षा, व्यवसाय व आर्थिक स्थिति को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

7. विवाह के बारे में राय :

तालिका – 7

क्र0सं0	विवाह	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	एक अटूट बन्धन	30	60
2	एक समझौता	08	16
3	मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध	12	24
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका में आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि आज भी सर्वाधिक 60 प्रतिशत सूचनादाता विवाह को अटूट बन्धन मानती है जबकि 16 प्रतिशत के अनुसार विवाह एक समझौता है और 24 प्रतिशत का मानना है कि यह पति–पत्नी का मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध है।

अतः निष्कर्ष निकलता है कि सदैव में विवाह को जन्म जन्मांतर का सम्बन्ध समझने वाली सोच अब बदल रही है। शिक्षित कार्योजित महिलाएं अब इसे समझौता व मैत्री सम्बन्ध समझने लगी है।

8. वैवाहिक समायोजन की आव□यकता :

तालिका – 8

क्र0सं0	वैवाहिक समायोजन आवश्यक	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	49	98
2	नहीं	01	02
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका में दिये गये आंकड़े दर्शाते है कि 98 प्रतिशत सूचनादाताओं का मानना है कि वैवाहिक समायोजन आवश्यक है जबकि मात्र 2 प्रतिशत इससे असहमत है।

9. वैवाहिक जीवन से सन्तुष्टि :

तालिका – 9

क्र0सं0	वैवाहिक जीवन से सन्तुष्टि	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	30	60
2	नहीं	20	40
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से पता चलता है कि सर्वाधिक 60 प्रतिशत सूचनादाता अपने पति व विवाह से सन्तुष्ट है जबकि 40 प्रतिशत संतुष्ट नहीं है।

वैवाहिक समायोजन में समस्याएं :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए किये गये सर्वे के दौरान सूचनादाताओं को वैवाहिक समायोजन करने में निम्न समस्याएं आती है।

1. पति का माँ के प्रति लगाव

तालिका – 10

क्र0सं0	माँ के प्रति लगाव	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	अधिक	35	70
2	सामान्य	15	30
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 70 प्रतिशत सूचनादाताओं के पति अपनी माँ के प्रति अधिक तथा 30 प्रतिशत के सामान्य लगाव रखते है। सर्वेक्षण के दौरान यह भी तथ्य सामने आये कि जिन परिवारों में पतियों का लगाव माँ के प्रति अधिक है वहां पत्नियां अपने को उपेक्षित समझती हैं। पति के माँ के कहने में चलने पर असमायोजन की स्थिति उत्पन्न होती है।

2. पति के दायित्व निर्वहन में लापरवाही :

तालिका – 11

क्र0सं0	लापरवाही करते है	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	28	56
2	नहीं	22	44
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से पता चलता है कि सर्वाधिक 56 प्रतिशत सूचनादाताओं के पति अपने दायित्वों के निर्वहन में लापरवाही बरतते है। जबकि 44 प्रतिशत के पति लापरवाही नहीं बरतते। अतः जिन परिवारों में पति अपने दायित्वों को पूरा करने में लापरवाही बरते है वहां समायोजन में कठिनाई आती है।

3. आदतों व रूचियों में भिन्नता :

तालिका – 12

क्र0सं0	रूचियों में भिन्नता	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	32	64
2	नहीं	18	36
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 64 प्रतिशत सूचनादाताओं को पति की आदतों व रूचियों में भिन्नता के कारण सामंजस्य करने में कठिनाई आती है जबकि 36 प्रतिशत सूचनादाताओं के समक्ष ऐसी कठिनाई नहीं है वे पति की भिन्न आदतों व रूचियों के बावजूद भी सामंजस्य कर लेती है।

4. ससुराल में नौकरी को लेकर विरोध :

तालिका – 13

क्र0सं0	विवाद	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	27	54
2	नहीं	23	46
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका में सूचनादाताओं की नौकरी करने को लेकर ससुराल वालों द्वारा विरोध की स्थिति देखने पर ज्ञात होता है कि 54 प्रतिशत सूचनादाताओं के ससुराली उनकी नौकरी का विरोध करते है जबकि 46 प्रतिशत के ससुराल में उनकी नौकरी करने को लेकर कोई विरोध नहीं है।

5. सास–बहू सम्बन्ध :

तालिका – 14

क्र0सं0	सम्बन्ध	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	तनावपूर्ण	35	70
2	मैत्रीपूर्ण	15	30
	कुल	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका दर्शाती है कि 70 प्रतिशत सूचनादाताओं के अपनी सास के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण है। जबकि 30 प्रतिशत के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध है। सर्वेक्षण के दौरान यह भी पता चला कि सास बहू में तनाव का कारण सन्तान, गृह कार्य आदि है।

सन्तान :

प्रस्तुत अध्ययन में सूचनादाताओं के समक्ष वैवाहिक समायोजन में पति–पत्नी के बीच सन्तान की संख्या को लेकर भी मतभेद पाये गये। 30 प्रतिशत पति अपनी पत्नी की इच्छा के विरूद्ध मात्र एक ही सन्तान चाहते हैं जबकि 60 प्रतिशत पत्नियां दो सन्तानों की पक्षधर हैं। 10 प्रतिशत सूचनादाता दो बच्चे चाहती हैं पर उनके पतियों को अधिक सन्तान चाहिये।

सर्वेक्षण के दौरान यह भी तथ्य सामने आया कि अधिकांश सूचनादाताओं के दृष्टिकोण से सन्तान में एक पुत्र अवश्य होना चाहिए।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध पत्र के निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि सुखी वैवाहिक जीवन के लिए वैवाहिक समायोजन की आवश्यकता है। परन्तु वर्तमान में उच्च शिक्षित कार्योजित महिलाओं की सोच में विवाह को लेकर परिवर्तन आया है वे अब इसे अटूट बन्धन मानने की अपेक्षा एक समझौता और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध मानने लगी है। वे तथा उनके माता–पिता वर के चयन में उसकी शिक्षा, व्यवसाय व आर्थिक स्थिति को महत्व देते हैं। यद्यपि आज भी अधिकांश महिलाओं की अरेंज मैरिज होती है। फिर भी उनके वैवाहिक समायोजन में कठिनाईयां आती है। जैसे पतियों का माँ के प्रति अधिक लगाव, पति का विवाह के बाद दायित्वों के निर्वहन में लापरवाही, ससुराल में बहू की नौकरी का विरोध, सास से तनावपूर्ण सम्बन्ध, सन्तानों को लेकर पति से मतभेद आदि।

संदर्भ :

1. चौधरी एवं डी0 पाल (1991) ''वुमैन वेलफेयर एंड डेवलपमेंट : ए सोर्स बुक'' इंटर इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 59
2. भदौरिया, मृदुला (1997), ''वुमैन इन इंडिया'', ए0पी0एच0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 82
3. चक्रवर्ती, कृष्णा, ''दि कन्फ्लीक्टिंग वर्ल्ड आफ वर्किंग मदर'', 46–47
4. झा, उमा शंकर एवं प्रेमलता (1998), ''इंडियन वुमैन टूडे, ट्रेडीशन, मॉडर्निटी एवं चैलेंजेस'' काल–3, कृष्णा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 150
5. किरन बाला, शबनम (2017), 'विवाह के परिवर्तित स्वरूप एवं छात्राओं की मनोवृत्ति एक विश्लेषण'', अपराजिता शोध पत्रिका, वाल्यूम–3, जनवरी–दिसम्बर, 41–44
6. प्रकाश, रेनू (2018) ''कार्यरत महिलाओं में तनाव उत्पन्न करने वाली कार्यगत परिस्थितियां : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण'' राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 20, अंक 1, जन0–जून, 39–48
7. सिंह ऋचा एवं उदयभान सिंह (2018), ''कार्यरत महिलाओं के समक्ष व्यवसाय और गृह का भूमिका द्वन्द'' वर्ष 20, अंक 1, जन0–जून, 102–107.